एम.फिल. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-सारांश

यौनिकता, पितृसत्ता और जेंडर का अंतर संबंध

(अन्हियारे तलछट में चमका की नजर से)

'Yaunikta, Pitrisatta Aur Gender Ka

Antar Sambandh

(Anhiyare Talchhat Me Chamka Ki Nazar se)

प्रस्तुतकर्ती

नीलम

एम. फिल. सत्र 2014-2015

पंजीयन क्रं. 2014/03/212/011

स्त्री अध्ययन विभाग

ज्ञान शांति मैत्री

संस्कृति विद्यापीठ

स्त्री अध्ययन विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, वर्धा- 442001(महाराष्ट्र) भारत

शोध सारांश

प्रस्तुत लघु शोध जिसका शीर्षक 'पितृसत्ता, यौनिकता, और जेंडर का अंतर संबंध : अन्हियारे तलछट में चमका की नज़र से है' है। यह तीन अध्यायों में विभक्त है। पहला अध्याय के अंतर्गत हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्त्री लेखन की परंपरा को खोजने का प्रयास किया गया है। हिन्दी साहित्य के वैदिक काल से लेकर आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल तक स्त्री लेखन किन किन समस्याओं से जूझता रहा है, इसका विवेचन किया गया है साथ ही साथ इस अध्याय के अंतर्गत समकालीन स्त्री बह को सैद्धांतिक एवं साहित्यिक परिपेक्ष्य में दिखाने का प्रयत्न किया गया है।

द्वितीय अध्याय स्त्री विमर्श का द्वंद है जिसके अंतर्गत स्त्री विमर्श पर अब तक हुई बहसों का वर्णन किया है, जैसे कि स्त्री मुक्ति कि अवधारणा भिन्न भिन्न समाज में भिन्न भिन्न स्तरों व भौगोलिक परिस्थितियों के कारण भी अलग अलग होती है। स्त्री विमर्श के केवल नारी उत्पीड़न्न और संघर्ष की गाथा नहीं है, वरन वह समाज में पितृसत्ता, धर्म, न्याय के समस्त मुखौतों की पहचान कराने वाला है। जिसके तहत स्त्रियों को शोषण के संस्कार दिये जाते हैं। नारी ने पितृसत्तात्मक से मुक्ति के लिए आर्थिक समृद्धि को महत्व दिया। नारीवादी आंदोलन, नारी मुक्ति और नारी विमर्श के मूल में एक ही चिंतन है जो नारी को उसके मौलिक रूप के अस्तित्व में स्थापित करना चाहता है। इस प्रकार नारी विमर्श व्यवस्था परिवर्तन का प्रश्न है। आंदोलन के स्तर पर जिसे हम नारी विमर्श कहते हैं वह प्राय: अस्मिता विमर्श है। इस अध्याय में हाल की कुछ रचनाओं और युवा लेखिकाओं को आधार बना कर समसामयिक स्त्री समस्याओं जिसमें आर्थिक स्थितियाँ, वैज्ञानिकरण, औद्योगीकरण और तकनीक के विकास से उत्पन्न विभिन्न वर्णन स्थितियों और मान्यताओं का विघटन, स्त्री जीवन में घर कर गई निराशा और कुंठा, महानगरीय जीवन और उसकी बहुमुखी समस्याएँ भ्रूण राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था के प्रति स्त्री का तीव्र आक्रोश एवं असंतोष, प्रेम और सेक्स, नूतन भावबोध,

नौकरी-पेशा, नारी का दोहरा शोषण, नारी में आधुनिकता और पुरातनता का द्वंद, देश की राजनीतिक परिपेक्ष्य का सांगोपांग चित्रण, देश में शिक्षित बेरोजगारों की भयंकर समस्या आदि का वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का तृतीय अध्याय अन्हियारे तलछट में चमका के अंतर्गत पितृसत्ता, यौनिकता और जेंडर है। इस अध्याय के अंतर्गत अन्हियारे तलछट में चमका उपन्यास के माध्यम से समाज मे व्याप्त पितृसत्ता, यौनिकता और जेंडर के अंतरमबंध को दिखाने का प्रयास किया गया है। जेंडर और यौनिकता मनुष्य होने की एक केंद्रीय पहल है जो जीवन भर मौजोड़ रहता है। सेक्स, जेंडर आधारित पहचान व भूमिकाएँ, यौन रुझान, कामुकता, आनंद, अंतरंग और प्रजनन ये सभी यौनिकता के तहत आते हैं। मनुष्य अपनी सोच, अपनी कल्पनाओं, कामनाओं, विश्वासों, मूल्य-मान्यताओं, व्यवहार, आचरण भूमिका व सम्बन्धों में यौनिकता को अनुभव और व्यक्त करते हैं। हमारी यौनिकता बहुत सारे शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक आर्थिक, राजनीति और संस्कृति, नैतिक, कानूनी, ऐतिहासिक, धार्मिक और आध्यात्मिक कारकों के बीच के रिश्तों से प्रभावित होती है।

पितृसत्ता को सामाजिक ढांचों और व्यवहारों की व्यवस्था के रूप में जाना जाता है। जिसमें पुरूष स्त्रियों पर प्रभुत्व रखकर उनका शोषण व उत्पीड़न्न करते हैं। समाज के सभी महत्वपूर्ण संस्थानों पर पुरुष का प्रभुत्व है और इस प्रभुत्वशाली स्थिति तक पहुंचने से स्त्रियाँ वंचित है। पितृसत्ता व्यवस्था द्वारा पुरुषों द्वारा पुरुषों का स्त्रियों पर वर्चस्व रहता है और स्त्रियाँ अधीनता की स्थिति में रहती हैं। स्त्री अधीनता का अर्थ है, स्त्रियों के खाने, पीने, आने-जाने, रहने आदि यानि स्त्रियों के समस्त क्रियाकलापों पर मनुष्य का ही आधिपत्य रहता है। स्त्रियों पर पुरुषों का नियंत्रण के कारण संभव हो पता है। प्रश्न यह उठता है कि आखिर पुरुष स्त्री को नियंत्रण में क्यों रखना चाहता है, इसका उत्तर है स्त्री की यौन शुचिता। दर दर की ठोकरों इतना मुझे बता दो, मेरा कसूर क्या है ? हर युग व काल की स्त्री अपने सामनें उत्पन्न इन्ही प्रश्नों से जूझती है। उसका प्रश्न भी जायज है। आखिर स्त्री को महज़ स्त्री होने के कारण शोषण क शिकार होना पड़ता है। शोषण का यह रूप भी बड़ा विचित्र है

जिसे जेंडर विभेद के रूप में जाना जाता है। जेंडर समाज द्वारा स्त्री और पुरुष की गढ़ी गई परिभाषा है जिसके अंतर्गत उनकी सार्वजनिक और निजी जीवन की भूमिकाओं, व्यवहारोंव क्रियाओं का समाज द्वारा निर्धारण किया जाता है। अन्हियारे तलछट में चमका मुख्यतः दो पीढ़ियों की चार औरतों माँ, बिट्टों, मुन्ना बो, ननकी के सहारे एक जकड़े हुए समय में ठिठके हुए समाज से भागने की कोशिश में लगे हुए लोगों और संघर्ष करती हुई स्त्रियों की कहानी है। इस उपन्यास में तीखे स्त्री प्राशन है जो भारतीय समाज के पुरुष वर्चस्व वाली पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विपक्ष में है। पूंजीवाद की मनुष्य विरोधी व्यवस्था में तबाह होते छोटे पूंजीपति, दुकानदार, मजदूर है। असमानता है व दिशा हीनता है। शिक्षा की गुणवत्ता लोकांतर पर सवाल है। इस उपन्यास में स्त्रियों में एक आदर्श नारी को पाने की तड़प है जबकि उन्हे बार बार पितृसतात्मक व्यवस्था द्वारा अंधी गुफा में दाल दिया जाता है। स्त्री की दयनीय स्थिति समाज का अपमान इस उनयस में पितृसत्ता, यौनिकता और जेंडर के अंतरसंबंध को स्पष्ट व्याख्यायित करता है। यह हमारे समाज की ज़मीनी हकीकतों से पाठक को सचेत करने का कार्य करता ही। पूरा उपन्यास अपने नाम की भांति जितनी समस्याओं और अँधेरों से घिरा है पर अंत तक आते आते रोशनी की किरण चमकती है। सभी महिला पत्रों के निर्णय आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि इस लघु शोध प्रबंध के माध्यम से समाज में स्त्री की यौनिकता , पितृसत्ता और जेंडर के माध्यम से उसकी स्थिति को कैसे कायम रखा जाता है। कैसे एक इंसान को स्त्री बनाया जाता है , कैसे वह पितृसत्तात्मक ढाँचे में खुश रहती है , इत्यादि प्रश्नों को सामने लाने का प्रयास किया गया है।

Research Summary

My short short research title is "patriarchy, sexuality, and gender regarding: Anhiyaare Talchhat me Chamaka . It is divided into three chapters. Under the first chapter told that the history of Hindi literature has attempted to find the tradition of female writing. Hindi literature from Vedic age Beginning, Bhaktikal, Ritikal and adhunik times writings about women suffering from the problems, as well as under this chapter it has been discussed the theoretical and literary perspective flowing contemporary woman tries to show has been done .

Under the second chapter shows that the woman held her consultations on the conflict has so far described the debates, such as the concept of emancipation of women in different societies, different levels and geographical conditions also vary. Under which women are given the sacrament of exploitation. Women's liberation from patriarchal emphasis on economic prosperity. The feminist movement, women's liberation and women at the core of discussions is the same thinking that seeks to establish the woman's existence as its original. Thus the change in the system of exchange of women is concerned. The level of movement which we exchanged woman says she often identity is exchanged. In this chapter of recent works by young writers to create economic conditions in which contemporary woman problems, scientific, industrialization and technology development resulting from the dissolution of various descriptions conditions and assumptions, the woman went home in disappointment and

frustration of life, cosmopolitan life and his versatile embryonic political problems of social order intense anger and resentment toward women, love and sex, innovative sensibility, secular, double exploitation of women, women in conflict with modernity and antiquity, the political context of the country's thoroughly illustration, country In severe problem of educated unemployed, etc. are described.

The third chapter presents dissertations is patriarchy, sexuality and gender sediment under the Anhiyaaare Talchhat me chamka . Under this chapter in sediment Anhiyaare Talchhat novel pervades society through patriarchy, sexuality and gender Antrmbnd has attempted to show. Gender and sexuality of man is a central initiative which lasts throughout life Mujod. Sex, gender identity and roles-based, sexual orientation, eroticism, pleasure, intimate sexuality and reproduction under all come. Man your thinking, your fantasies, desires, beliefs, value-beliefs, attitudes, conduct role and relationship experience and express sexuality. A lot of our sexuality physical, psychological, social, economic, political and cultural, ethical, legal, historical, religious and spiritual factors that affect the relationship between.

Patriarchy as a system of social structures and practices known. By the male dominance on women are exploited and harassment. All the key institutions of society is male dominated and women are deprived of access to the dominant position. Patriarchy system remains dominated by men, women by men and women are in a state of subjection. Female subordination means women eat,

drink, movement, etc., ie women who dominated the lives of all human activities. Allows for the control of men over women. The question that arises is why in the end, a woman wants to keep control, is the answer to her chastity. Rate the Tokron so tell me, what is my fault? Every era and have struggled with these questions arise during the visits to the woman. The question is justified. After all, the only woman, the woman has to be a victim of abuse. It is a strange form of exploitation which is referred to as gender discrimination. Gender is defined by the society in which man and woman crafted roles of the public and private life, behaviours actions are determined by society. Four women mom of two generations of sediment Anhiyaaare primarily brighten, Bitton, TOT Bo, Nanaki Titke in support of a plagued time trying to escape from the society and the people had struggled story of women. This novel is shows that male has woman dominated patriarchal Indian society is in the opposition. Human beings are destroyed in the anti-system of capitalism small capitalists, shopkeepers, labourers. Inequality is faltering and direction. democracy questions on the quality of education. Among women in this novel is a perfect woman yearning to get by while he repeatedly patriarchy blind cave system is the pulse. The plight of women in society insulted the patriarchy, sexuality and gender is described inter clear. The ground realities of our society only serves to alert the reader. The entire novel problems like its name and is surrounded by darkness a beam of light shines on you come to the end. All female letters represent the modern woman's decision.

So can be said that the dissertations through the sexuality of women in society, patriarchy and gender through how his position is maintained. It is shows that how is a man made woman, how she is happy in patriarchal structures. questions to bring out an attempt has been made.